भारत में आतंकवाद के बदलते आयाम

डॉ0 संजय
एसोसिएट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन
कुँवर सिंह पी0जी0कॉलेज, बलिया (उ0प्र0)

शोध–सार

'आज वैश्विक परिवेश में जिस प्रसंग का अवतरण हुआ है वह है आतंकवाद। जिसने सम्पूर्ण मानवता को अपनी आगोश में ले चुका है। 9/11 की आतंकवादी घटना में संयुक्त राज्य अमेरिका के व्यवसायिक प्रतिष्ठान वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर एवं सुरक्षा सम्बन्धी मुख्यालय पेंटागन पर कुछ लोग सारे अत्याधुनिक सुरक्षा साधनों को धता बताते हुए आतंकवादी कारवाई कर दिया इससे ज्ञात होता है कि आज कोई भी राष्ट्र पूर्णरूप से सुरक्षित नहीं है। पूरे विश्व में अभी तक आतंकवाद को परिभाषित नहीं किया जा सका है। यह कही आतंकवादी है तो दुसरे की दृष्टि में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी। आतंकवाद का रहस्यलोक है कि ''एक को मारो ताकि दस हजार डर जाय।'' भारत में भी अनेक आतंकवादी घटनाए हुई, जिसमें अहमदाबाद, जयपुर, हैदराबाद, गुवाहाटी, दिल्ली, मुम्बई, बंगलुरू, मालेगाँव, जम्मू कश्मीर आदि में आतंकवादी घटनाओं को अंजाम दिया जिससे भारी आर्थिक क्षति हुइ। आज आतंकवाद का स्वरूप बदल गया है जो अत्यन्त भयावह हो गया है जैसे, जैव आतंकवाद, अनुवांशिक आतंकवाद, साइबर आतंकवाद, समुद्री आतंकवाद, नाभकीय आतंकवाद, मादक द्रव्यजनित आतंकवाद के रूप में सामने आया है जिससे उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति आतंकी घटनाओं को अंजाम दे रहे है। विश्व के सभी राष्ट्रों को एक साथ मिलकर आतंकवाद का मुकावला करने की आवश्यकता है।''

आज वैश्विक परिवेश में जिस प्रसंग का अवतरण हुआ है वह है आतंकवाद। जिसनें सम्पूर्ण विश्व को अपनी आगोश में ले चुका है। इससे अधिकांश देश त्रस्त है। सम्पूर्ण मानवता का अस्तित्व खतरे में दिखाई दे रहा है। आतंकवाद ने जहाँ विश्व के अनेक राजनेताओं को अपना शिकार बनाया, वहीं असंख्य निर्दोष लोंगों को भी मौत का सामना करना पड़ा। उम्मीद थी कि 20वीं सदी के दो विश्व युद्धों की विभिषिका के इतिहास में दर्ज होने के साथ–साथ विश्व मानवता शान्त एवं सृजनात्मक युग में प्रवेश करेंगी, लेकिन बीती सदी के अन्तिम चरण और नई सदी के शैशवकाल का घटना चक्र नई त्रासदियों की दिशा में घूमता दिखाई दे रहा है। आतंकवाद की शक्ल में दृश्य–अदृश्य छाया युद्धों का अन्तहीन सिलसिला चल पड़ा है। बेशुमार बदहालियों से जुझते, पिछड़ते और विकासशील देशों के अलावा विकसित देश भी आतंकवाद की गहरी एवं मजबूत गिरफ्त में है। विश्व महाशक्ति अमेरिका भी इसका अपवाद नहीं रहा।

9/11 की आतंकी घटना में संयुक्त राज्य अमेरिका के व्यवसायिक प्रतिष्ठान वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर एवं सुरक्षा सम्बन्धी मुख्यालय पेंटागन पर कुछ लोगों ने सारे अत्याधुनिक सुरक्षा साधनों को धता बताते हुए आतंकवादी कार्यवाही कर दिया। इससे ज्ञात होता है कि सारे सुरक्षा साधनों के बावजूद कोई भी राष्ट्र अब पूरी तरह सुरक्षित नहीं है। अब लड़ाई केवल अमेरिका से अलकायदा जैसे आतंकी संगठन के बीच न होकर, अब आतंकवाद से लड़ने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय मोर्चेबन्दी की आवश्यकता होनें लगी है। यह आतंकवाद अन्तर्राष्ट्रीय उद्योग बन गया है। जो पूर्ण वित्तीय सहयोग प्राप्त उद्योग है, जिसके कर्मचारियों को घूस के अतिरिक्त बड़ी मात्रा में वेतन मिलता है। विचारकों की धारणा है कि यह आतंकवाद आर्थिक रूप से पिछड़े या

विकासशील राष्ट्रों में ही पनपता है, परन्तु यह सत्य प्रतीत नहीं होता, बल्कि यह अविकसित एवं विकसित दोनों राष्ट्रों में समान रूप से फैल रहा है। आतंकवाद की आज तक सर्व स्वीकृत और सर्वव्यापी परिभाषा नहीं खोजी जा सकी, क्योंकि विश्लेषक इस विषय में अपनी अवधारणा में अपनें मुल्यों से प्रभावित होते है जैसा कि इस बात में देखा जा सकता है कि एक देश के आतंकवादी दुसरे देश में नायक के रूप में देखे जाते है। इस स्थिति ने आतंकवाद की समस्या को और जटिल बना दिया, अतः इसका लाभ वे लोग उठा रहे हैं, जो विश्व शान्ति के शत्रु है अथवा जो

अपनी विचार धारा विशेषकर, दुसरे देशों समाजों और वर्गों पर जबरन थोपना चाहते है। आज आतंकवाद राजनीतिक स्वार्थो की पूर्ति का माध्यम बन गया है।

आतंकवाद एक विश्व परिघटना है और इसका इतिहास भी काफी पुराना है। टेररिज्म (आतंकवाद) शब्द का आविष्कार फ्रेंच क्रान्ति के दौरान (1789–1799) किया गया था। उन दस वर्षों के दौरान की गयी नृशंसता एवं बर्बरता पूर्ण कारवाई को एक नया उपनाम दिया गया– आतंक का दौर।

आतंकवाद को 1937 में लीग आफ नेशनल ने परिभाषित करते हुए स्पष्ट किया है कि ''किसी भी राष्ट्र या व्यक्ति के खिलाफ आतंक व अव्यवस्था फैलानें के लिए किए गये आपराधिक कार्य आतंकवाद के दायरे में आयेंगे। सामान्यतया आतंकवाद का मुख्य तत्व हिंसा है, जो परम्परागत हथियारों का उपयोग कर स्थापित सरकार के विरूद्ध हिंसात्मक कार्यवाही करते है। आतंकवाद का रहस्यलोक है कि ''एक को मारों, ताकि दस हजार डर जायें। इन आतंकवादियों का उद्देश्य सामान्यतया भय या धमकी देकर अपनें कुछ उद्देश्यों की प्राप्ति करना होता है। 1988 में संयुक्त राष्ट्र की अपराध शाखा के आतंकवाद विशेषज्ञ ए0पी0श्मिड ने 100 से अधिक परिभाषाओं को सूची बद्ध किया और कहा कि ''आतंकवाद एक चिन्ताजनक विधि है जिसमें बारम्बार हिंसात्मक गतिविधियों और व्यक्तिगत या सरकारी तौर पर राजनीतिक या आपराधिक कारणों से व्यक्ति अथवा समुह द्वारा अवांछित कार्यवाही अंजाम दी जाती है और यह किसी हत्याकाण्ड के एकदम विपरीत होती है जिसमें हिंसा का शिकार ही मुख्य लक्ष्य नहीं होते आतंकवादी संगठन तथा पीड़ित प्रभावित व्यक्ति के बीच धमकी और हिंसा आधारित संचार प्रक्रिया का इस्तेमाल मुख्य लक्ष्य को प्रभावित करनें के लिए होता है।''

भारत पहले से ही आतंकवाद का शिकार रहा है। भारत में आतंकवाद की घटनाए निश्चित रूप से पाकिस्तान प्रायोजित रही है। पाकिस्तान आतंकवादियों को कई प्रकार की सुविधाएँ प्रदान करके भारत के विरूद्ध भड़कानें एवं भारत में जघन्य कार्यवाही करने हेतु प्रेरित किया। भारत की विशेषता विविधता में एकता का आदर्श उदाहरण है, परन्तु आज की बदली परिस्थितियों व सामाजिक समरसता पर प्रश्न चिन्ह लग गया है, जो न केवल राजनीतिक अखण्डता के लिए खतरा है बल्कि क्षेत्रीय, आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकि तथा शैक्षिक प्रगति के साथ–साथ भारत की शान्ति और विकास के लिए भी बाधक है।

पाकिस्तान अपने जन्म से ही भारत के विरूद्ध षडयन्त्र करता रहा है। 1947–48, 1965, 1971 के भारत–पाक युद्ध के पश्चात् पाकिस्तान को यह आभास हो गया कि वह अब भारत के विरूद्ध प्रत्यक्ष रूप से युद्ध में जीत हासिल नहीं कर सकता, तत्पश्चात् 1980 के दशक से भारत के विरूद्ध अप्रत्यक्ष युद्ध प्रारम्भ कर दिया। उसनें पूर्वी पाकिस्तान का बदला लेने हेतु पंजाब के लोगों को खालिस्तान की माँग की आड़ में सहायता प्रदान करना शुरू किया। खालिस्तान के स्वंयभू नेता डा0 जगजीत सिंह चौहान एवं महासचिव बलवीर सिंह संधू ने इस आन्दोलन को व्यापक एवं उग्र बनानें तथा जनमत तैयार करने हेतु हर सम्भव प्रयास प्रारम्भ किये। आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव की आड़ में पंजाब जलने लगा। खालिस्तान की मांग को लेकर भारत में क्षेत्रीय

आतंकवाद का जन्म हुआ। यहाँ के आतंकवादियों को धन हथियार और प्रशिक्षण पाकिस्तान से प्राप्त होने लगा। यहाँ पर आतंकवादियों ने अमृतसर स्थित पवित्र धर्म स्थल स्वर्ण मन्दिर को किले के रूप में अपना ठिकाना बनाया, परिणाम स्वरूप भारत सरकार स्वर्ण मन्दिर को आतंकवादियों से मुक्त कराने के लिए स्वर्ण मन्दिर में ''आपरेशन गोल्डेन टेम्पल या आपरेशन ब्लू स्टार (1984) अभियान हेतु सैन्य कार्यवाही की, जिसमें जनरैल सिंह भिंडरा वाला के साथ बहुत से आतंकी मारे गये। यहाँ की जनता जब आतंकवाद से त्रस्त हो गयी तो उसने पुलिस एवं सेना के जवानों की मदद लेकर पंजाब के आतंकवाद को खत्म कर दिया। इस आतंकी हिंसा में पंजाब के लगभग 20000 से अधिक लोग हिंसा में मारे गये।

पंजाब के आतंकवाद को खत्म करने में तत्कालीन पुलिस महा निदेशक जे0एफ0 रिवेरो तथा तत्कालीन पुलिस महानिदेशक के0पी0एस0 गिल ने महत्वूपर्ण भूमिका निभाई किन्तु भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी, पंजाब के मुख्यमंत्री बेअन्त सिंह, जनरल ए0एस0 वैद्य एवं हरचन्द सिंह लोगोंवाल को इस आतंक के युद्ध में शहीद होना पड़ा। पंजाब के आतंकवाद को समाप्त होता देख पाकिस्तान की खुफिया एजेन्सी आई0एस0आई0 ने 1989 में जम्मू कश्मीर में आतंकवादी कार्यवाही में तीव्रता ले आई। कश्मीर घाटी धीरे–धीरे आतंकवादियों के शिकजें में जकड़ती चली गयी उन्होंने अपहरण, बम विस्फोट, हत्याओं, मजहबी तकरीरों और प्रेस सेंसर शिप के जरिये कश्मीर घाटी को प्रशासनिक और मनोवैज्ञानिक रूप से भारत से अलग करनें का प्रयास किया। इन आतंकवादियों के डर से अपनी जान बचानें के लिए लाखों कश्मीरी पंडित अपना घर बार एवं करोड़ों की सम्पत्ति को छोड़कर पलायन को मजबूर हो गये। 1986–87 के आस–पास पाक अधिकृत कश्मीर लाहौर, इस्लामाबाद के इर्द–गिर्द केवल आधे दर्जन आतंकवादी शिविर थे जो बढ़कर 200 से अधिक हो गये है।

आज भारत में एक नये प्रकार का आतंक नक्सलवाद के रूप में उपस्थित हो गया है जो पश्चिम बंगाल के एक छोटे से गाँव नक्सलवाड़ी के किसान आन्दोलन के रूप में 25 मई 1967 में प्रारम्भ हुआ। इसके नेतृत्वकर्ता चारू मजुमदार, कानू सान्याल, जंगल संथाल, कदम मलिक आदि थे। ये नक्सलवादी माओत्से–तुंग की विचार धारा ''राजनीतिक शक्ति बन्दुक के नाल से निकलती है'' पर आधारित अपना आन्दोलन चला रहे है किन्तु यह आन्दोलन रास्ता भटक कर आतंकवाद की शक्ल को अपना लिया है तथा ये 'पशुपति से तिरूपति' तक एक लाख गलियारा का निर्माण करके 22 राज्यों के 231 जिलों में फैला चुका था जो लगभग 92000 वर्ग कि0मी0 क्षेत्र में अपनी पकड़ बना चुका था।

पूर्वोत्तर भारत के असम, मेघालय, मणिपुर, त्रिपुरा, मिजोरम, नागालैंड एवं अरूणाचल प्रदेश विगत कई दशकों से उग्रवाद एवं आतंकवाद से ग्रस्त है। आजादी के पश्चात् से ही इस क्षेत्र में कुछ ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति रही कि यहाँ पर शान्ति तथा सुव्यवस्था स्थापित करनें के लिए जितने भी प्रयास किये गये उससे उपद्रव की ज्वाला भड़कती गई। इन राज्यों में विद्रोही संगठन भारत के संवैधानिक ढ़ाचे के अन्तर्गत अपनें को उपेक्षित अनुभव करते है। इस क्षेत्र में आतंकवाद ने जन जीवन को मुश्किल बना दिया है, पुर्वोत्तर राज्यों के युवा वर्ग ने अपने छोटे–छोटे अनेक उग्रवादी संगठन बना रखे है। इन संगठनों को बाहर से हथियार मिल जाते है तत्पश्चात् वे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के कारण हिंसा, लूटपाट, अपहरण आदि अनैतिक कार्यवाही में लिप्त हो गयें हैं। बांग्लादेशी घुसपैठ भी पूर्वोत्तर राज्यों में आतंकवाद को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। बांग्लादेश सहित 12 देशों में काम करने वाले एक अन्तर्राष्ट्रीय गैर सरकारी संगठन कन्सर्न इण्टरनेशनल का आकलन है कि कम से कम 50 बाग्लादेशी प्रतिदिन भारत में चले आते है।

विगत वर्षों पर ध्यान दिया जाय तो अहमदाबाद, जयपुर, हैदराबाद, गुवाहाटी, दिल्ली, मुम्बई, बंगलुरू, मालेगाँव, वाराणसी आतंकी निशाने पर रहे है। 13 दिसम्बर 2001 को भारत के हृदय स्थल संसद भवनएवं 26 नवम्बर 2008 को आर्थिक राजधानी मुम्बई, 2013 बोध गया विस्फोट, 2014 में पटना चुनावी सभा विस्फोट, 04 जनवरी 2016 पठानकोट एयरफोर्स स्टेशन पर हमला, जून 2016 पांपोर में सी0आर0पी0एफ0 कैम्प पर हमला, सितम्बर 2016 उरी सेक्टर के सेना मुख्यालय पर हमला, तथा फरवरी 2019 में पुलवामा हमला आदि अनेक आतंकवादी कारवाई को अंजाम दिया गया। जिसमें लश्कर–ए–तैयबा, जमात–ए–इस्लामी, जैश–ए–मुहम्मद, हिजबुल मुजाहिन, अल–बदर, इण्डियन मुजाहिदीन, हरकत–उल–जिहाद–अल–इस्लामिक,
खालिस्तान कमाण्डो फोर्स, खालिस्तान लिवरेशन फोर्स, बब्बर खालसा, सिक्ख स्टुडेन्ट फेडरेशन, दमदमी टकसाल, खालिस्तान नेशनल आर्मी, युनाइटेड लिवरेशन वालन्टियर्स आफ अरूणाचल प्रदेश, युनाइटेड लिवरेशन मुवमेन्ट आफ अरूणाचल प्रदेश, यूनाइटेड लिबरेशन फ्रन्ट आफ असम, बोड़ो सिक्युरिटी फोर्स, नेशनल सोशलिस्ट कौंसिल आफ नागालैण्ड (के), नागा नेशनल कौंसिल (अडिनों)/नागा फेडरल गवर्नमेन्ट, पिपुल्स लिवरेशन आर्मी, आल त्रिपुरा ट्राइवल आर्मी, पिपुल्स वार ग्रुप, माओइस्ट कम्युनिष्ट सेन्टर, ओ0सी0सी0आर0 एवं सी0पी0आई0 (माले) आदि अनेक आतंकवादी संगठन भारत में अपनी आतंकी गतिविधि को संचालित कर रहे है।

वास्तव में देखा जाय तो इसके फैलने के कारण में सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक व्यवस्था का बीमार एवं कमजोर होना है। जब सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक अन्याय किसी न किसी रूप में बढ़ेगा, न्याय मिलने में विलम्ब होगा, तब आतंकवाद किसी न किसी रूप में अवश्य फैलेगा। बेरोजगारी, अशिक्षा, सामाजिक आर्थिक विषमताएं, राजनीतिक स्वार्थपरता, क्षेत्रवाद, जातिवाद, धर्मान्धता, भाषाई–भेदभाव, भौगोलिक एवं ऐतिहासिक कारण, सांस्कृतिक टकराव, प्रशासकीय निष्क्रियता, स्वार्थी मनोवृत्ति, भ्रष्टाचार आदि अनेक प्रमुख कारण है। इसमें मुस्लिम राष्ट्र प्रमुख भूमिका निभा रहे है। कहीं–कहीं आतंकवाद प्रतिशोध की भावना से भी प्रबल हो रहा है। इसके अतिरिक्त आतंकवाद के फैलने के कुछ प्रमुख कारण निम्नवत है–

(1) मादक पदार्थो एवं हथियारों के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को नियन्त्रित करना।
(2) इजराइल–फिलीस्तीन समस्या का शीघ्रनिदान।
(3) आर्थिक राजनैतिक स्थिति को बदला जाय (तेल पर आधारित अर्थ व्यवस्था)
(4) बेरोजगारी की समस्या का शीघ्र निदान (युवा लोग जो राष्ट्र निर्माण के लिए पूँजी तथा राष्ट्रीय विघटन के लिए हथियार बन सकते हैं)
(5) अमेरिका द्वारा आतंकवाद को सही परिभाषित करना।
(6) प्रत्यर्पण सन्धि को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लागू करना।
(7) आतंकवाद प्रायोजित राष्ट्रो को चिन्हित करना एवं उचित कार्यवाही करना।
(8) आतंकवादी प्रशिक्षण शिविरों को बन्द कराना।

विश्व में भारत को एक उदार राष्ट्र के रूप में मानता रहा है यहाँ की गरीब जनता प्रतिदिन 22 रूपये से कम आय में अपना गुजारा करती है। पाकिस्तान भारत के साथ अप्रत्यक्ष युद्ध लड़ रहा है उसके द्वारा प्रायोजित आतंकवाद आन्तरिक सुरक्षा के साथ–साथ अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित कर रहा है। 1999 के कारगिल युद्ध में आतंकियों का सहयोग पाकिस्तान के द्वारा किया गया। जिसमें अफगानिस्तान, बहरीन, वर्मा, बांग्लादेश, चेचेन्या, इराक, ईरान, कजाकिस्तान, पाकिस्तान, सऊदीअरब, सुडान, सीरिया, तुर्की एवं यमन के आतंकवादी शामिल हुए थे। भारत एवं पाक के इस कारगिल संघर्ष में भारत के कुल 1984 करोड़ रूपये खर्च हुए। नवम्बर 2008 के मुम्बई की आतंकवादी घटना ने भारत की अर्थव्यवस्था पर गहरी चोट की। इन हमलों से

मुम्बई को लगभग 4000 करोड़ का नुकसान हुआ। एसोचैम के अनुसार ताज होटल को फिर से ठीक करने में लगभग 500 करोड़ रूपये खर्च होने का अनुमान था। 2001 में भारत के संसद पर हुए आतंकी हमले की ओर दृष्टि डालते है तो पाते है कि इस घटना के पश्चात् पाकिस्तान से युद्ध की तैयारी करने में लगभग 8000 करोड़ रूपये ''आपरेशन पराक्रम'' पर खर्च कर दिया गया है और दस माह तक सेना सीमा पर चौकसी करती रही।

आज आतंकवाद का जाल विश्व व्यापक हो गया है और इनके अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप में भी तेजी से विकास हुआ है। संसार के विभिन्न आतंकवादी गिरोह आपस में आतंकवाद की रीतिनीति, शस्त्र और संचार के उपकरण आदि के बारे में व्यापक पैमानें पर आदान–प्रदान कर रहे है। आज अमेरिका, रूस, फ्रांस, ब्रिटेन, चीन, इजराइल, भारत, फिलीपीन्स, श्रीलंका, जापान सहित अनेक आतंक प्रभावित राष्ट्र है। आज आतंक का जाल लगभग 160 देशों में फैल गया है भारत में आतंकी घटनाओं में लगभग 60000 से अधिक नागरिक मारे जा चुके है, आज यह आतंकवाद पर स्वरूप बदलकर नये रूपों में सामने आया है जिसमें जैविक आतंकवाद, नाभकीय आतंकवाद, मादक द्रव्य जनित आतंकवाद (नार्को टेररिज्म), अनुवांशिक आतंकवाद, समुद्री आतंकवाद एवं साइबर आतंकवाद के रूप में खुब फल–फूल रहा है। इसके साथ ही आज का आतंकवाद इस्लामिक आतंकवाद के रूप में भी उभर कर सामने आया है जो मूलरूप में मजहबी उन्माद वस्तुतः अहंकार का ही एक सामूहिक स्वरूप है जहाँ पर व्यक्ति अपने मजहब को ही अन्तिम सत्य मानता है, उसका मार्ग दर्शन मजहवी पुस्तकों, सोशलमीडिया, फेसबुक इन्स्ट्राग्राम, ट्विटर आदि के माध्यम से होता है यह कट्टरता इस्लाम में काफी उभर कर सामने आया है क्योंकि उनके आधारभूत विश्वास के अनुसार खुदा का दिखाया हुआ इस्लाम ही एक मात्र मार्ग है। इसी सिद्धान्तों ने अवुनिदाल, अबुलअब्बास, ओसामा बिन लादेन, अबुबकर– अल–बगदादी आदि दुर्दान्त आतंकवादी पैदा किये। आतंकवादी घटनाओं के कारण श्रीमती इन्दिरा गाँधी, श्री राजीव गाँधी, जान एफ कैनेडी, शेख मुजीबुर्रहमान, बेनजीर भुट्टो, जनरल जियाउलहक, आदि शिकार हुए।

आज आतंकवाद का स्वरूप अत्यन्त भयावह हो गया है आज के आतंकवादी उच्च शिक्षा ग्रहण कर ऊचे पदो पर बैठकर इस प्रकार की घटनाओं को सम्पन्न कर रहे है पाकिस्तान के डा0 सुल्तान वशीरूद्दीन तथा फ्रांस के वैज्ञानिक डा0 एडलीन हाईश्यूर की गिरफ्तारी चौकाने वाली थी डा0 हाइश्यूर जिनेबा के परमाणु शोध के यूरोशियन संस्थान 'सर्न' में कार्यरत थे इनका सम्बन्ध अलकायदा से था आज आतंकवाद 20% की दर से बढ़ रहा है इन आतंकवादियों की सोच, क्षमता, सहीकता आदि चीजे दिल दहलाने वाली है। आज आतंकवादियों की सरकारें भी बनती दिख रही है जो विभिन्न देशों से समर्थित है। भारत सरकार 5 अगस्त 2019 को जम्मू कश्मीर से धारा 370 एवं 35A को हटाकर जम्मू कश्मीर एवं लद्दाख क्षेत्र को दो केन्द्र शासित प्रदेश में स्थापित कर आतंकवाद पर एक कुठाराघात किया है। भारत सरकार आतंकवाद एवं भारत की आन्तरिक एवं वाह्य सुरक्षा से खिलवाड करने वाले लोगों के साथ सख्ती से निपटने हेतु सेना तथा सुरक्षा एजेंसियों के आपसी तालमेल द्वारा पूरी तरह से छूट प्रदान किया है। भारत सरकार विभिन्नि प्रकार के परियोजनाओं द्वारा बेरोजगारी खत्म करने एवं शिक्षा का स्तर ऊचा उठाने हेतु प्रयासरत है। आतंकवाद को समाप्त करने हेतु भारत सरकार वैश्विक संगठनों से भी सहयोग प्राप्त कर रहा है। अन्त में यह स्पष्ट है कि आतंकवाद आतंकवाद है भले ही उसका मकसद, ध्येय, मांगे कुछ भी हो इसे 21वीं सदी में वैश्विक स्तर पर समाप्त करना आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. जोशी, प्रो0 राम शरण : आतंकवाद एवं हम, मनोरमा इयरबुक 2001, पृष्ठ–25

2. लाल, नन्द–बीमार समाज की देन : आतंकवाद, स्वतंत्र भारत, वाराणसी संस्करण, 20–2–1993, पृष्ठ–7
3. सिंह, डॉ0 अशोक कुमार : राष्ट्रीय सुरक्षा के आयाम, द्वितीय संस्करण 2019, पृष्ठ–270
4. पुरी, रक्षत : अपरिभाषित आतंकवाद के परिणाम, दैनिक जागरण वाराणसी संस्करण, 27–2–2003, पृष्ठ–10
5. सिंह, डॉ0 लल्लन जी : राष्ट्रीय रक्षा एवं सुरक्षा, संस्करण–2006, पृष्ठ–63
6. सिंह, डॉ0 लल्लन जी : राष्ट्रीय रक्षा एवं सुरक्षा, संस्करण–2006, पृष्ठ–61
7. पाल, शुतपा : पश्चिम बंगाल में बसता पूर्वी बंगाल, इण्डिया टुडे, 2 फरवरी 2011, पृष्ठ–23
8. राष्ट्रीय सहारा (परिशिष्ट) सीमा पर क्यों गयी, क्यों लौटी, 25 अक्टूबर